अध्याय 13

अब्राहम और लूत का अलग होना

जब अब्राहम मिस्र में गया तो वह पहले से ही धनी था (12:5)। उसके धोखे क कामों के बावजूद, परमेश्वर ने उसे फिरौन की उदार भेंटों के द्वारा और भी आशीष दी (12:16; 24:35)। फिर भी अब्राहम और सारा को मिस्र छोड़ने पर अपनी यात्रा फिर से आरम्भ करनी पड़ी।

कनान में उनकी वापसी यात्रा स्पष्ट रूप से घटित नहीं थी। हो सकता है कि देश की सीमा तक शायद उन्हें कोई राजकीय अधिकारी ले गया हो। अकाल के विषय में भी नहीं पढ़ते जिसने उन्हें प्रतिज्ञा के देश के बाहर निकाला।

हम इसमें कुछ नहीं कर सकते परन्तु अब्राहम और सारा के सम्बन्ध से आश्चर्यचकित है जब उन्होंने मिस्र छोड़ा। कुलपिता के स्वार्थी विश्वासघात के बाद भी जो उसने उसे फिरौन को देते हुए किया, क्या वे अभी भी एक दूसरे से प्रभावशाली सम्पर्क बना सके थे?

अब्राहम का कनान को लौटना और लूत के साथ विवाद (13:1-7)

[1]तब अब्राहम अपनी पत्नी और अपनी सारी सम्पत्ति लेकर लूत को भी संग लिये हुए, मिस्र को छोड़कर कनान के दक्षिण देश में आया। [2]अब्राहम भेड़-बकरी, गाय-बैल और सोने-रूपी का बड़ी धनी था। [3]फिर वह दक्षिण देश से चलकर, बेतेल के पास उसी स्थान पर पहुंचा जहां उसका तम्बू पहले ही पड़ा था जो बेतेल और ए के बीच में है। [4]यह स्थान उसी वेदी का है, जिसे उसने पहले बनाई थी और वहां अब्राहम ने फिर यहोवा से प्रार्थना की। [5]और लूत के पास भी, जो अब्राहम के साथ चलता था, भेड़-बकरी, गाय-बैल और तम्बू थे। [6]सो उस देश में उन दोनों की समाई न हो सकी कि वे इकट्ठे रहें क्योंकि उनके पास बहुत धन था इसलिए वे इकट्ठे न रहे सके। [7]सो अब्राहम और लूत की भेड़-बकरी और गाय-बैल के चरवाहों के बीच में झगड़ा हुआ: और उस समय कनानी और परिज्जी लोग, उस देश में रहते थे।

आयत 1. थोड़े वर्णन के साथ, लेखक अब्राहम की **मिस्र से नेगेव** की तरफ़ (देखें टिप्पणी 12:10 पर) वापसी को दर्ज करता है। वह **अपनी पत्नी** और दल के साथ था जबकि लूत अकेला ही था। यद्यपि पहले से यह नहीं बताया गया कि **लूत** मिस्र में उनके साथ था, पर यह वचन स्पष्ट रूप से बताते हैं कि वह अब्राहम

के साथ मिस्र से कनान के नेगेव को गया। इससे ऐसा चरण तैयार होता है जब दो लोगों के बीच बहुत जल्द विभाजन होने वाला था।

आयत 2. मिस्र में जाने से पहले ही अब्राहम एक धनी व्यक्ति था (12:5)। उसके धोखे के कामों के बावजूद, परमेश्वर ने उसे फिरौन की उदार भेंटों के द्वारा बहुत आशीष दी (12:16, 20)। इस समय तक, अब्राहम **एक धनी व्यक्ति था - सिर्फ़ पशुओं में ही नहीं परन्तु सोने और चांदी में भी** (देखें 24:35)।

आयतें 3, 4. कुलपिता के उत्तरी **नेगेव से** पहाड़ी देश के मध्य में फिर उसी स्थान पर वापिस गए जब तक उनका दल **बेतेल और ऐ के बीच** नहीं पहुंचा जहां पर उन्होंने पहले भी अपना **तम्बू खड़ा** किया और **वेदी** बनाई थी। अब्राहम का वापिस उसी स्थान पर आना इस सत्य का संकेत करता है कि शायद मिस्र में अपनी घोर असफलता के बाद, अब्राहम परमेश्वर के साथ अपने पुराने अनुभव को ठीक करना चाहता था। उसने वहां आराधना की, **परमेश्वर को पुकारते हुए** (देखें 12:8 की टिप्पणी पर)। जबकि लेखक ने यह प्रकट नहीं किया कि उसकी आराधना में पश्चाताप था या मिस्र में अपने पापी व्यवहार से जागृत होकर परमेश्वर से माफ़ी के लिए विनती की हो, ऐसी मान्यता को शायद आश्वासन दिया गया हो।

दूसरा सत्य था मौसम जिसकी वजह से शायद अब्राहम इस इलाके के पहाड़ी देश के मध्य में आया हो। ठंडे और नमी वाले महीनों (अक्तूबर से मार्च तक) में, झुंड मैदानों में चर सकते हैं। गर्मी और सूखें महीनों (अप्रैल से सितम्बर) में, वे ऊँचाइयों में चले जाते हैं जहां घास बची होती है और झरनों और सोतों में पानी उपलब्ध रहता है।[1]

आयत 5. अब्राहम ही एकमात्र व्यक्ति नहीं था जिसके पास भौतिक आशीषें बहुतायत से थी; **लूत** जिसने उसके साथ यात्रा की थी, उसने भी समृद्ध आशीषें प्राप्त की थी जिनमें **झुंड और पशु शामिल हैं**। इसके साथ-साथ **तम्बुओं** की बताई गई गिनती यह प्रभाव डालती है कि (अब्राहम की ही तरह) उसके साथ भी दास दासियां यात्रा में थे। कई चरवाहों के परिवार भी शायद उनके साथ थे (देखें 14:16)। इसलिए जैसे लेखक दो व्यक्तियों की इकट्ठी सम्पत्ति बताता है, तो यह सबूत है कि अब्राहम और लूत का इकट्ठे यात्रा करना असम्भव होगा।

आयत 6. लोगों और पशुओं के ऐसे बड़े समूह इकट्ठा रहने के लिए जगह में समा न सके क्योंकि उन्हें वहां अधिक मात्रा में पानी और चरागाह के लिए ज़मीन की आवश्यकता होती। आसान शब्दों में कहें, तो अब्राहम और लूत की **सम्पत्ति** (इतनी) ज़्यादा थी कि वे दोनों इकट्ठे नहीं रह सकते थे। इसके पश्चात, याकूब और एसाव को समान परिस्थिति का सामना करना पड़ा (36:6, 7)।

आयत 7. लेखक यहाँ इस तथ्य को डालता है कि उस समय **कनानी और परिज्जी लोग उसी देश में रहते थे**। इसका अर्थ यह है कि सिर्फ़ अब्राहम और लूत के चरवाहों में ही नहीं बल्कि उस देश के मूल निवासियों और अस्थाई लोगों के बीच भी झगड़े थे। इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग पहले से ही कनान में रहते थे वे बड़ी संख्या में लोगों, पशुओं और मवेशियों के साथ परदेसियों को अपने देश

आते देख कर चौकन्ने हो गए थे।[2] तनाव अब्राहम और लूत के **चरवाहों** और कनानी और परिज्जी लोगों के बढ़ने से था। आखिरकार, भूमि ज़्यादा चराई जा चुकी थी और मवेशियों के लिए अधिक चराई तथा पानी हेतु सीमित कुएं और कुंड थे जिन पर वहां पहले से रहने वाले लोग अपना दावा करते थे।

विवाद "चरवाहों" के बीच आमतौर पर उनके **पशुओं** के लिए पानी और चराई की जगह के लिए हुआ होगा, जैसे बाद में इसहाक और अबीमेलेक के चरवाहों के मामले में हुआ (26:12-33)। अध्याय 12 में तनाव पति और पत्नी के बीच आया और अब चाचा और भतीजे के चरवाहों में उनके व्यक्तिगत सम्बन्धों की धौंस देते हुए झगड़ा शुरु हो गया।

अब्राहम का उदारता से भरा प्रस्ताव और लूत का चुनाव (13:8-13)

[8]तब अब्राहम लूत से कहने लगा, "मेरे और तेरे बीच, और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगड़ा न होने पाए; क्योंकि हम लोग भाईबन्धु हैं। [9]क्या सारा देश तेरे सामने नहीं? सो मुझ से अलग हो, यदि तू बाईं ओर जाए तो मैं दक्षिण की ओर जाऊंगा; और यदि तू दक्षिण की ओर जाए तो मैं बाईं ओर जाऊंगा।" [10]तब लूत ने आंख उठाकर, यरदन नदी के पास वाली सारी तराई को देखा, कि वह सब सिंची हुई है। [11]जब तक यहोवा ने सदोम और अमोरा को नाश न किया था, तब तक सोअर के मार्ग वह तराई यहोवा की वाटिका, और मिस्र देश के समान उपजाऊ थी। [12]अब्राहम तो कनान देश में रहा, पर लूत उस तराई के नगरों में रहने लगा, और अपना तम्बू सदोम के निकट खड़ा किया। [13]सदोम के लोग यहोवा के लेखों में बड़े दुष्ट और पापी थे।

आयत 8. अब्राहम ने तनाव कम करने और समस्या का शांतिपूर्वक हल निकालने का निश्चय किया। उसने लूत के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बंध के महत्व को जाना क्योंकि वे विरोधी समूह और बराबरी करने वाले लोगों के देश के बसते थे। यहाँ हम असामान्य इब्रानी भाषा देखते हैं: यह कहने की बजाय "हम भाई हैं," लिखित अक्षर के अनुसार, "भाई, पुरुष, हम हैं।" इन शब्दों में "पुरुष" और "भाई" साथ-साथ हैं। कहने का तात्पर्य यह है: केवल भाइयों को नहीं बल्कि पुरुष भी आपस में न लड़ें।[3] यह शब्द "बन्धु" אַחִים *(आखिम)* सीधा शाब्दिक तौर पर न समझा जाए, बल्कि एक "रिश्तेदार" (ESV) या "सम्बन्धी" (NLT) के समान समझा जाए। आखिरकार लूत अब्राहम का भतीजा अर्थात कुलपिता के भाई हारान का पुत्र था (11:27)। एक बुज़ुर्ग अपने जवान सम्बन्धी के साथ झगड़ों को सुलझाना चाहता था और यह भी कि उनके बीच के सारे **विवाद** समाप्त हो जाएँ।

अब्राहम ने बहुत जल्द इस भयभीत करने वाली परिस्थिति का समाधान निकालने का कार्य किया जो कि उससे बिल्कुल विपरीत था जो उसने मिस्र में किया था। जैसे उसने नील की तराई में विवाद पैदा किया। अब इससे पहले कि

वह पहाड़ जैसी इस तनाव की स्थिति किसी दंगे में बदल जाए उसने उसको बहुत जल्दी ठीक कर दिया। मिस्र में उसने स्वार्थ से कार्य किया। परन्तु कनान में आने पर अपनी परवाह न करते हुए लूत को उदारता प्रदान की। कोई कुछ नहीं कर सकता परन्तु आश्चर्य की बात है कि शायद अब्राहम ने मिस्र की असफलता से कुछ सीखा होगा। बेतेल के पास वेदी पर आने और परमेश्वर से जुड़ने ने (13:4) शायद उसके चुनाव प्रभाव डाला हो।

बाद में; यह प्रकट हुआ कि अब्राहम अपने पुत्र को भी विवाद की बजाए शांति की इच्छा करना सिखाया। गरार के राजा अबीमेलेक के चरवाहों द्वारा बनाए गए कुँओं पर जो उसके थे, उसने दावा नहीं किया जबकि वह अपने कानूनी अधिकार पर ज़ोर दे सकता था, जिससे शायद हिंसा हुई होती। इसहाक ने अपने कुएं त्यागते हुए शान्ति का मार्ग चुना और अपने दासों को आज्ञा दी कि वे किसी दूसरे स्थान में दोबारा कुएं खोदें (26:18-22)।

आयत 9. जबकि यह जरूरी है कि अब्राहम और लूत अपने परिवारों और धन सम्पत्ति के साथ, अपने-अपने **अलग** रास्तों पर चले, अब्राहम एक प्रस्ताव रखता है। वह लूत को कनान क्षेत्र में, जहाँ वह चाहे वहां जाकर बसने की अनुमति देता है। कुलपिता ने अपने लिए कुछ भी नहीं रखा और कहा, **"क्या सारा देश तेरे सामने नहीं है?"** उसने लूत से कहा, **"अगर तू बाएं जाए तो मैं दाएं जाऊंगा; और अगर तू दाएं जाए तो मैं बाएं जाऊंगा।"**

ऐसी बात ने ज़रूर लूत को हैरान कर दिया होगा; क्योंकि पूर्वजों के समाज में बुज़ूर्ग सम्बन्धियों को - चाहे पिता हो या चाचा - यह फ़ैसला लेने का अधिकार होता था और जवान उनकी बात का सम्मान करते थे। इसके साथ-साथ, यह वही चुनाव था जो प्रभु ने पहले से ही अब्राहम की पीढ़ी से कनान देश की प्रतिज्ञा के लिए लिया था (12:7)। कुलपिता स्वाभाविक और तार्किक रीति से उस भूमि और उसके सारे संसाधनों पर अपना अधिकार कर सकता था ताकि भविष्य में लूत की पीढ़ी उस पर दावा न कर सके।

इस मौके पर किस बात के अब्राहम को प्रेरित किया? एक बात की सम्भावना यह है कि अब्राहम अपने परिवार को आशीष देने की कोशिश कर रहा था। जब परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया, उसने आज्ञा दी कि वह, "आशीष का मूल" होगा (12:2) परन्तु आशीष के स्थान पर जब कुलपिता ने फिरौन से सारा के विषय में झूठ बोला तो वह उसके घराने पर "श्राप" (महामारी) लेकर आया (12:17)। शायद इस बार उसने फ़ैसला किया कि वह अपने भतीजे के लिए "आशीष का मूल" होगा, इस कारण वह उसे अपनी इच्छानुसार भूमि चुनने की अनुमति देता है।

एक और विचार यह है कि यह अब्राहम की तरफ़ से विश्वास का कार्य था। उसका लूत के लिए ऐसे उदार चुनाव की अनुमति देना उसका परमेश्वर पर भरोसे को ज़ाहिर करता है जिससे उसकी योजनाएं और लक्ष्य पूरे हो जाएं। इब्रानियों के लेखक ने अब्राहम के विषय में यह कहा, "विश्वास ही से वह प्रतिज्ञा किए हुए देश में एक परदेशी होकर पराए देश की तरह, तम्बुओं में रहा" (इब्रा.

11:9)। दूसरों शब्दों में विश्वास के पिता ने भूमि के उस बड़े भाग पर, जिसे लूत ने नहीं चुना था, किसी प्रकार का लोभ नहीं किया। उन्होंने इस मुद्दे को प्रभु पर छोड़ दिया कि वह अपने सही समय पर, और अपनी इच्छा के अनुसार देश से सम्बन्धित प्रतिज्ञा को पूरी करे।

आयत 10. तब लूत ने आंख उठाकर, यरदन नदी के पास वाली तराई को देखा, कि वह सब **उपजाऊ और सींची हुई है**। लेखक अब्राहम के जीवन काल की परिस्थिति का अपने पाठकों की परिस्थिति से क्रमबद्ध विरोधाभास व्याख्या करता है: वह इस बात को जोड़ता है, कि ऐसा **प्रभु के सदोम और अमोरा को विनाश करने से पहले हुआ** एक विनाश जो उनके महापाप के कारण हुआ (13:13; 19:1-29)। यरदन तराई के कुछ क्षेत्रों में, जैसे की यरीहो में, मध्यवर्ती पहाड़ी देश में बसंत ऋतु पर वर्षा होती है जिससे फसल और सब्ज़ियाँ बहुतायत से होती है; फिर भी ज़्यादातर क्षेत्र का उपजाऊपन प्रभु के तराई के शहरों को विनाश करने के बाद खत्म हो गया (19:1-29) कुछ बदलाव जलवायु में और भौमिकी तौर पर भी हुए, और वे इस बात की व्याख्या करते हैं आज से ज़्यादा अब्राहम के समय में ये क्षेत्र अधिक उपजाऊ और हरे भरे थे।

जब लूत ने उस क्षेत्र को देखा, तो उसने अपने दिमाग में यह तस्वीर बनाई कि **परमेश्वर का बाग** (अदन वाटिका) कैसा दिखता होगा: समृद्ध और फलवन्त (2:8-14; देखें यशा. 51:3; यहेज. 36:35)। हो सकता है कि उसने यह तस्वीर **मिस्र देश में** अपनी यात्रा से ली हो, जहां उसने अकाल के समय अब्राहम के घराने के साथ यात्रा की थी।

यह वाक्य **"सोअर के मार्ग तक"** मुश्किल है क्योंकि सोअर का स्थान अनजाना है। ये एक कस्बे की तरह मृत सागर के दक्षिणी अंत में दिखाई देता है,[4] सदोम और अमोरा से ज़्यादा दूर नहीं है (14:2, 8; 19:22-24, 30)।[5]

आयत 11. लूत का उस क्षेत्र को चुनना उसकी आँखों देखी पर आधारित था। पाठ यह कहता है कि उसने **अपने लिए यरदन की सारी तराई को चुना** और अपने दल के साथ **पूर्व की तरफ़ गया** ताकि वहां बस सके। जहां लूत बसा, वहां उसका ठीक-ठीक तालमेल न हो सका; संकेत सभी सीमाओं की तरफ़ है: उत्तर, पूर्व, दक्षिण और मृत सागर के पश्चिम में। कुछ लोग यह मानते हैं कि पुरातन सदोम, जहां लूत असल में रहता था, वास्तव में उसका कुछ भाग समुद्र के नीचे चला गया है, इसलिए आजकल उसे देखा नहीं जा सकता है।[6]

इस रीति से, अब्राहम और लूत **एक दूसरे से अलग हुए**। जहां इस खास समय में कनान देश की सीमा अस्पष्ट है, बाद में मूसा के युग में, प्रतिज्ञा के देश की सीमाओं का वर्णन गिनती 34:1-12 में किया गया है जिसमें यरदन नदी के पूर्व और पश्चिम दोनों क्षेत्रों को शामिल किया गया है; जबकि उत्पत्ति 13 में "कनान देश" सिर्फ़ यरदन के पश्चिम के भाग को स्पष्ट रूप से बताया गया है (13:10-12) इसलिए, जब लूत पूर्व दिशा की तरफ़ गया तो वह कनान देश के किनारे से जा रहा था और हो सकता है उसके भी परे से। 10:19 में सदोम और अमोरा और साथ ही साथ तराई के अन्य शहर निश्चित रूप से देश की सीमा पर थे। जब

लूत मध्यवर्ती पहाड़ी देश से पूर्व की तरफ़ गया, तो, वह वास्तव में प्रतिज्ञा के देश से अपनी पीठ घुमा रहा था और उस क्षेत्र की तरफ़ यात्रा शुरु कर रहा था जो उसके वंशज, मोआबी और अम्मोनी, यरदन के पूर्व के अंत में अपने कब्ज़े में लेंगे। अब्राहम से पूर्व की तरफ़ विभाजित होते समय, लूत परमेश्वर की आशीषों से दूर जा रहा था और जैसे 14:12 और 19:12-16 में साफ़ हो जाता है कि, वह परमेश्वर से श्राप को निमंत्रण दे रहा था।

आयत 12. लूत के चुनाव के परिणामस्वरूप **अब्राहम कनान देश में बस गया और लूत तराई के नगरों में बस गया**। इस संदर्भ में इस शब्द "बस गया" יָשַׁב *(यशब)* का अर्थ यह नहीं कि उसने निश्चित रूप से किसी खास जगह पर रहना शुरु कर दिया। अब्राहम विश्वास में रहते हुए, कनान में "बस गया" यद्यपि उसने एक स्थान से दूसरे स्थान, "तम्बुओं में रहते हुए" (इब्रा. 11:9) यात्रा की। लूत का सत्य भी यही था, जो एक नगर से दूसरे नगर की तरफ़ बढ़ता गया और आखिरकार **अपना तम्बू सदोम तक ले गया**। उसके बाद, इसमें शायद ज़्यादा समय नहीं लगा, जब शहर की सक्रियता से आकर्षित होकर, उसने उस शहर के बीच में अपने परिवार के लिए घर बनाया (14:12)।

आयत 13. इस मोड़ पर, लेखक अपने पाठकों के लिए एक और धर्मवैज्ञानिक व्याख्या देता है: **अब सदोम के लोग परमेश्वर के सामने बड़े दुष्ट और पापी थे। यह बात लूत के सदोम क्षेत्र में जाने की मूर्खता का चुनाव करने को दर्शाती है।** स्पष्ट रूप से, वह यरदन की तराई की उपजाऊ स्थिति पर इतना मोहक हो गया कि उसने पाप से भरे वातावरण में जीने के खतरों को भी नजरअंदाज कर दिया। सदोमियों की जीवन शैली यह वर्णन करती है कि वे कितने "दुष्ट" רַע *(रा)* थे। ये वही वर्णनात्मक शब्द हैं जो जल प्रलय से पहले की पीढ़ी के लिए इस्तेमाल किया गया (6:5; 8:21)। परन्तु पाठ्य भाग आगे और भी विस्तार से उन्हें परमेश्वर के "विरुद्ध ... अत्यंत दुष्ट" बताता है। आज के युग में वास्तव में यह अनोखी बात लगती होगी; आधुनिक समाज यह दावा करता है कि दो वयस्कों ने यदि कुछ भी आपसी रज़ामंदी से किया है तो उसे गलत या "पाप" नहीं समझा जाना चाहिए। बहुत लोग यह मानते हैं कि एक का दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध पाप करने जैसे कामों को परमेश्वर के विरुद्ध पाप कहकर पुकारना नहीं चाहिए। यहाँ लेखक सदोमियों के दुष्ट कर्मों के स्वभाव को विस्तार से नहीं बताता है; वह केवल उनके विनाश का संकेत देता है जो सदोम और तराई के नगरों की दुष्ट विकृति के कारण उन्हें नष्ट करने की प्रतीक्षा में थी, यह 19 अध्याय से सम्बन्धित है।

परमेश्वर का देश की प्रतिज्ञा को नया करना और अब्राहम की प्रतिक्रिया (13:14-18)

[14]जब लूत अब्राहम से अलग हो गया जब उसके पश्चात यहोवा ने अब्राहम से कहा, आंख उठाकर जिस स्थान पर तू है वहां से उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम,

चारों ओर दृष्टि कर। 15क्योंकि जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को युग युग के लिए दूंगा। 16और मैं तेरे वंश को पृथ्वी की धूल के किनकों की नाई बहुत करूंगा, यहां तक कि जो कोई पृथ्वी की धूल के किनकों को गिन सकेगा वही तेरा वश भी गिन सकेगा। 17उठ, इस देश की लम्बाई और चौड़ाई में चल फिर; क्योंकि मैं उसे तुझी को दूंगा। 18इसके पश्चात अब्राहम अपना तम्बू उखाड़कर, मम्रे के बांजों के बीच जो हेब्रोन में थे जाकर रहने लगा, और वहां भी यहोवा की एक वेदी बनाई।

लूत के यरदन तराई के लिए अलग होने के बाद, परमेश्वर अब्राहम से फिर बात करता है। उसने पहले से ही कनान देश में अब्राहम और उसके वंश को अपनी ज़मीन देने की प्रतिज्ञा की थी (12:7)। अब इस समय, परमेश्वर ने देश की प्रतिज्ञा को दोहराया और कहा कि वह अब्राहम के साथ उसकी पीढ़ी को आशीष देगा।

आयतें 14, 15. लूत ने "अपनी आँखें उठाई" कनान की सीमा और उसके परे की ज़मीन की उपज को देखने के लिए, और उसके मायने में वह इतनी आकर्षक थी कि उसने वहां जाने का स्वार्थी और दुर्भाग्यपूर्ण फ़ैसला किया (13:10, 11)। लूत द्वारा निर्णय लेने के बाद **परमेश्वर** ने अब्राहम को अधिकार दिया कि (वह अपनी) **आंखें उठाए और देखें ... उत्तर की तरफ़ और दक्षिण की तरफ़ और पूर्व की तरफ़ और पश्चिम की तरफ़ कनान देश के सभी ओर परमेश्वर उसकी अगुवाई कर रहा था** कि वह अपना चुनाव उस ईश्वरीय योजना और मकसद के आधार पर करे, जिसे परमेश्वर ने उसके लिए और उसकी पीढ़ी के लिए रखा है जिन्हें यह देश परमेश्वर की अनन्त עוֹלָם *(ओलाम)* भेंट के रूप में प्राप्त करना था।

आयत 15 से अनुवाद, में मुश्किल खड़ी होती है क्योंकि बाइबल को पढ़नेवाले अक्सर इसका अर्थ यह सोचते हैं कि अब्राहम के वंशज परमेश्वर से बिना शर्त और स्थिर भेंट के रूप में, इस प्रतिज्ञा के देश को "सदा" के लिए प्राप्त करने पर थे। ऐसे विचार ने मसीहियों के बीच महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक विवाद पैदा कर दिए हैं तथा मध्य पूर्वी जगत में मुस्लिम और यहूदियों के बीच गम्भीर राजनीतिक और सैन्य समस्याएं खड़ी कर दी हैं कि इस सन्दर्भ में अब्राहम की पीढ़ी (इस्राएली) कनान देश पर कितने लम्बे समय के लिए कब्ज़ा रखेंगी, "सदा" एक अच्छा अनुवाद नहीं है। ओलाम का अच्छा अनुवाद होगा "एक लम्बे समय" या "युग तक बने रहना" जो समय को अनिश्चितता में रखता है।[7] बहुत से परिच्छेद यह संकेत देते हैं कि इस्राएलियों के प्रतिज्ञा के देश पर बने रहने के लिए प्रभु के आज्ञाकारी रहना ही एकमात्र शर्त और आधार है।

बार-बार और कई बार, कनान में प्रवेश करने से पहले मूसा के द्वारा इस्राएलियों को चेताया गया कि अगर वे परमेश्वर की वाचा (दस आज्ञाओं के साथ) से परे हो जाएं और झूठे देवताओं की पूजा करें, तो वे देश से हाथ धो बैठेंगे (व्यव. 6:10-15; 11:8, 9; 28:15-21, 36, 37, 58-65)। इसके अतिरिक्त लोगों को यह याद दिलाते हुए कि उन्हें क्या नहीं करना चाहिए, मूसा परमेश्वर

की प्रतिज्ञा के सकारात्मक पहलू पर ज़ोर देता है। उन्हें प्रभु से प्यार करना था, उसकी बात माननी थी और उससे जुड़े रहना होगा। मूसा ने कहा, "इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, और उसकी बात मानों, और उस से लिपटे रहो; क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घ आयु यही है, और ऐसा करने से जिस देश को यहोवा ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब, तेरे पूर्वजों को देने की शपथ खाई थी उस देश में तू बसा रहेगा" (व्यव. 30:20)।"

आयत 16. इस आयत से पहले, जो वृत्तान्त हमने अब्राहम के "वंशज" के विषय में देखे वे स्वाभाविक रीति में सामान्य हैं। यहां तक कि "बड़ी जाति" (12:2) की प्रतिज्ञा भी पुरातन समय में इतनी महत्वपूर्ण नहीं थी क्योंकि अपेक्षाकृत छोटे समूहों के लिए भी ऐसे शब्दों के जैसे ही समझा जाता था। फिर भी परमेश्वर कुलपिता की संतान की अधिक संख्या को प्रकट करने के लिए यहां यह उपमा देते हैं: वह अब्राहम के **वंश को पृथ्वी की धूल के समान अनगिनत** बनाने की योजना को प्रगट करता है, ताकि कोई भी उनको गिन न सके (देखें 15:5; 22:17; 26:4; 28:14; 32:12)।

आयत 17. इसके आगे प्रभु ने अब्राहम को निर्देश दिया कि वह **देश की लम्बाई और चौड़ाई में चले फिरे**, संभव है "मालकियत के चिन्ह" के समान जैसे प्राचीन पूर्वी देश में कुछ राजा किया करते थे।[8] प्रभु ने कोई व्याख्या नहीं दी कि यह कैसे होगा। कुलपिता पूरी रीति से जानता था कि देश कनानियों के वश में है और यह कि सारा अब भी बांझ थी। वह सिर्फ़ यह कर सकता था कि प्रभु की प्रतीक्षा करे और विश्वास में लगातार चलता जाए।

आयत 18. अपने दावे की ज़मीन पर चलने के बाद, **अब्राहम अपने तम्बू को आगे बढ़ाता और नेगेव में मम्रे के वृक्षों पास बस जाता है**, जो **हेब्रोन** के उत्तर से 2 मील की दूरी पर है[9] (देखें 23:19; 25:9)। मम्रे नाम एक अमोरी के नाम पर रखा गया था (देखें 14:13) जिसने बाद में अपने भाइयों के साथ मिल कर मेसोपोटामिया के चार राजाओं को हराने तथा लूत और सदोम के लोगों को बचाने में अब्राहम की मदद की थी (14:14-16)। यद्यपि अब्राहम ने कनान के मूर्तिपूजक लोगों में से कुछ अच्छे मित्र बनाए, पर वह उनकी किसी भी मूर्तिपूजक वेदी से दूर रहा। कनान में परमेश्वर के लिए आराधना स्थान ढूंढने की बजाय, उसने परमेश्वर के लिए वहां **एक वेदी बनाई**, जैसे उसने पिछली बार किया था (12:7, 8)। हम कल्पना कर सकते हैं कि वह इतनी बहुतायत की आशीष के लिए और उन बहुत से वंशजों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहता था जिन्होंने प्रतिज्ञा के देश को प्राप्त करना था, और वहां बढ़ना और सम्पन्न होना था।

अनुप्रयोग

आशीषों का "खतरा" (अध्याय 13)

परमेश्वर के प्रचुर प्रावधान आशीषों या श्राप की तरफ़ ले जा सकते हैं। आरम्भ से, परमेश्वर अपने लोगों को सिर्फ़ आशीष ही देना चाहता था। उसने उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, उनको बहुतायत की समृद्धि देते हुए सब उपलब्ध किया। उसने एक सुंदर संसार बनाया और आदम और हव्वा को उपयुक्त वातावरण में रखा: एक स्वर्गिक बगीचा जो अच्छी तरह सींचा हुआ था और जहाँ शारीरिक जीवन के निर्वाह के लिए हर प्रकार के पेड़ और पौधे थे। सिर्फ़ एक ही पेड़ का फल खाने से उन्हें वर्जित किया गया था, भले ओर बुरे के ज्ञान का पेड़, जिसे परमेश्वर ने चेतावनी दी कि वह मृत्यु लाएगा। फिर भी, सांप ने उनके हृदयों में यह बात डाली कि परमेश्वर के मन में वास्तव में आदम और हव्वा के लिए दिलचस्पी नहीं है। उनको यह यकीन दिलाया कि परमेश्वर द्वारा उनसे इसे दूर रखने का अभिप्राय यह है कि वह उनको सर्वश्रेष्ठ आशीष देने से वंचित कर रहा था। वे परमेश्वर के समान बनाना चाहते थे; उन्होंने ज्ञान, सामर्थ्य और उत्तम समृद्धि की अभिलाषा की, और साथ ही साथ वे कुछ भी छोड़ना नहीं चाहते थे।

निश्चित रूप से परमेश्वर जानता था कि मनुष्य एक शारीरिक प्राणी है, और सब आशीषें पाकर भी वह कभी परमेश्वर के समान नहीं हो सकता। अगर ऐसा हो भी जाता तो भी शारीरिक आशीषें और सम्पत्ति कभी भी सदा ठहरने वाली खुशी, संतुष्टि और तंदुरुस्ती नहीं दे सकती। इसके विपरीत, मनुष्य का मानना यह है कि जिसके पास जितना ज़्यादा है वह उतना ही ज़्यादा की उम्मीद करता है। मनुष्य की चीजें पाने की जिज्ञासा कभी तृप्त नहीं होती है। ज़रूरी नहीं कि धन और सम्पत्ति बुरी ही होती है, वास्तव में ये अच्छी भी हो सकती है यदि इन्हें किसी के परिवार को ज़रूरतों को पूरा करने में इस्तेमाल किया जाए या उससे दूसरे के जीवनों को वह आशीष दी जाए जिसकी उन्हें कमी है। फिर धन और सम्पत्ति खतरनाक हैं क्योंकि इनके लोभ में पड़ने की, स्वार्थी बनने की, और इन्हीं के लिए जीने की और अधिक से अधिक खरीदने की परीक्षा हमेशा बनी रहती है।

पैसे के लोभ ने कई परिवारों में झगड़े पैदा किए और यहां तक कि कुछ घर टूट गए, इसलिए कि लोगों को प्राथमिकता देना नहीं आता। लोगों ने और ज़्यादा धन और शक्ति जो उसके साथ आती हैं पाने की इच्छा से अपने जीवन को नाश कर दिया है; वे इसकी परवाह नहीं करते कि अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए उन्हें कितने अनैतिक और दुष्ट कर्म करने पड़ेंगे। हज़ारों-हज़ारों लोग युद्ध में मारे जाते उनके अगुवों के कारण जिनकी धन और शक्ति पाने की प्यास बुझने वाली नहीं लगती है।

पौलुस तीमुथियुस को याद दिलाता है, "क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं और यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो, तो इन्हीं से संतुष्ट रहना चाहिए" (1 तीमु. 6:7, 8)। प्रेरित धन के खतरे को केन्द्रित

करता हुआ आगे बढ़ता है (1 तीमु. 6:9)। वह इस बात को जोड़ता है कि पैसा लोगों के जीवनों की बर्बादी और विनाश का कारण नहीं, परन्तु, "पैसे का लोभ" है। धन की इच्छा "सब बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी कर लिया है" (1 तीमु. 6:10; देखें मत्ती 6:19-24; लूका 12:15-21; 1 यूहन्ना 2:15-17)। ज्ञान, शक्ति, धन और सम्पत्ति के मोह में पड़ना एक प्रकार से परीक्षा की परिस्थिति होती है जिसका अध्याय 13 के आरम्भ में अब्राहम और लूत ने भी सामना किया।

धन और सम्पत्ति झगड़े का कारण हो सकती है (13:1-7)। जब अब्राहम मिस्र से वापिस आया, तो वह सच में एक धनी व्यक्ति था। हम जानते हैं कि वह पहले से ही पशुओं और गुलामों में धनी था जब वह कनान जाने के लिए हरान से निकला, जैसे उसके पास 318 योद्धा थे जो उसी के घर में पैदा हुए थे (14:14) यद्यपि उसने यह सोचते हुए फिरौन से धोखा किया कि सारा उसकी पत्नी नहीं उसकी बहन है, पर जब वह मिस्र से निकला, तो राजा ने उसे उसके पशुओं और गुलामों (नर और नारी) के साथ ही साथ उसे सोना चांदी भी दीं (12:16, 20)। पाठ यह कहता है कि जब अब्राहम कनान वापिस आया तो वह "बहुत धनी" था (13:1, 2)।

इन्हीं वर्षों के दौरान लूत भी इसी तरह बहुत उन्नत हुआ। जब वह मिस्र से वापिस आया, उसके पास भी, "पशु और झुंड और तम्बू थे" (13:5)। "तम्बू" शब्द यह सूचित करता है कि उसके पास बहुत ज़्यादा गुलाम चरवाहे थे जो उसके जानवरों की देखभाल और उसकी सम्पत्ति की सुरक्षा कर सकते थे। वास्तव में, दोनों व्यक्तियों के पशु और झुंड इतने बड़े थे कि "उस जगह इकट्ठे रहने के लिए वे समा न सके" (13:6)। इसी से "अब्राहम के पशुओं के चरवाहों" और लूत के पशुओं के चरवाहों के मध्य झगड़े उत्पन्न हुए (13:7)। चाचा और भतीजे के इकट्ठे न रहने का एक संभावित कारण यह है कि चरागाह सीमित थी और कनानियों तथा परिज्जियों ने ज़्यादातर ज़मीन पर कब्जा कर रखा था (13:7)।

अब्राहम और लूत ने इस बड़े विवाद का सामना किया जो पानी और भोजन के संघर्ष के लेकर पैदा हुआ था, जिसके कारण उनके पशुओं के झुंड, उनके चरवाहे और उन चरवाहों के परिवार परेशानी में थे। ये दो व्यक्ति किस हद तक इस विवाद में पड़े, इसका कोई उल्लेख नहीं; परन्तु यदि उनका टकराव हिंसा में बदल जाता तो उनके गुलामों के साथ-साथ, उनके खुद के भी हालात दुखद होते। इन दो परदेसी समूहों के बीच इस झगड़े के कारण वे कनानियों और परिज्जियों के हमले की चपेट में भी आ गए होते। संयुक्त मोर्चे के बिना शक्तिशाली शत्रु के सामने वे आसानी से पराजित हो सकते थे।

"विरोध" शरीर का काम है जो "ईर्ष्या," "बैर" और "क्रोध" के साथ ही सूची में लिखा गया है (गला. 5:20)। ये लक्षण आत्मा के फल से बिल्कुल विपरीत है (गला. 5:22, 23) जिसमें से प्रेम सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित है। बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा ही अवलोकन नीतिवचन में करता है, जहां वह कहता है, "बैर से तो झगड़े उत्पन्न

होते हैं परन्तु प्रेम सब अपराध ढांप लेता है" (नीति. 10:12) और, लालची मनुष्य झगड़ा मचाता है (नीति. 28:25)। पवित्र शास्त्र स्पष्ट लिखता है कि प्रेम में जो शारीरिक पापों जैसे ईर्ष्या, नफरत और क्रोध के कारण कमी आ जाती है; ऐसे स्वभाव से झगड़ा उत्पन्न होता है और सभी मानवीय सम्बंध खराब हो जाते हैं।

जो विश्वास के द्वारा चलते हैं वे अपने उदार कार्यों से मेल मिलाप करने वाले हो सकते हैं (13:8, 9) अब्राहम ने फ़ैसला किया कि वह गड़बड़ी करने वाले की बजाय मेल मिलाप रखने वाला बनेगा, परन्तु उसका फ़ैसला बहुत कीमती था। लूत का चाचा होते हुए (वह उसके मृत भाई हारान का पुत्र था), वह उस नौजवान व्यक्ति के लिए पिता बन गया। यद्यपि यह पदवी उसे देश का भाग चुनने का अधिकार पहले देती है जो उसने और उसके साथियों ने हासिल करना था, अब्राहम ने सब बातों को अनसुना किया; और अपने पहले चुनने के अधिकार को छोड़ते हुए, उसने उदारता से लूत को चुनने की अनुमति दी।

जब अब्राहम ने कहा, "मेरे और तेरे बीच झगड़ा न होने पाए" (13:8) "विवाद" के लिए जो शब्द अनुवाद किया गया वह है מְרִיבָה *(मरीबा)*। इस शब्द का बाद के इस्राएली लोगों के लिए खास महत्व था उस बात के कारण जो जंगल में पीने के लिए पानी न होने के कारण घटी। निर्गमन 17:7 कहता है कि लोगों ने मूसा के विरुद्ध, अपने "झगड़े" ריב *(रीब)* या विवाद से यहोवा की परीक्षा की। मरीबा भी वह शब्द है जो इस्राएल के परमेश्वर के साथ विवाद के लिए इस्तेमाल किया गया है। इससे उनके बीच हुए बहुत बड़े विवाद का संकेत मिलता है। भजनकार कहता है कि यह उनके मन की कठोरता के कारण हुआ कि लोगों ने इस प्रकार से व्यवहार किया (भजन 95:8)। अब्राहम इस बात को समझ गया कि उसके चरवाहों और लूत के चरवाहों के बीच यह बहुत बड़ा विवाद एक दंगे का रूप ले सकता है, इसलिए उसने ऐसी घटना को टालने के लिए जल्दी की।

अब्राहम ने निर्धारित कर लिया कि किसी का खुद ही के लिए स्वार्थी होने और अपनी मर्ज़ी पूरी करने की बजाय भाइयों में शांति होना ज़्यादा महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार बाद में यीशु ने अपने जीवन से प्रकट किया, और उसी स्वभाव के द्वारा पौलुस ने फिलिप्पियों में कुछ मसीहियों को दृढ़ किया जो मतभेद की आत्मा के कारण संघर्ष कर रहे थे। वह उनको एक दूसरे से प्रेम करने, एक मन होने, और "स्वार्थी भावना से या झूठे घमंड से कुछ न करने" (फिलि. 2:3) पर बल देता है। इसके बाद वह उन्हें समझाता है कि "अपने ही हित की नहीं, परन्तु दूसरों के हित की चिंता करें" (फिलि. 2:4) वह यीशु की नम्रता और निस्वार्थ के एकमात्र उदाहरण का इस्तेमाल करता है, यह कहते हुए कि मसीह ने परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। अपने विशेषाधिकारों, सामर्थ्य, और महिमा जो स्वर्ग में उसकी थी छोड़कर मसीह मनुष्य की समानता में पृथ्वी पर आया और सारी मानवजाति के पापों के लिए क्रूस पर स्वेच्छा से मरा (फिलि. 2:5-8; देखें 1 यूहन्ना 2:1, 2)।

जो देखकर चलते हैं अक्सर आसानी से धोखा खाते और त्रासदी में पड़ते हैं (13:10-13)। लूत अब्राहम से बिल्कुल भिन्न व्यक्ति था। चाचा मेल मिलाप वाला था जबकि भतीजा बार-बार गड़बड़ी करने वाला दिखाया गया है। वह अंततः जहां कहीं भी गया गड़बड़ी का सामना किया। लूत बुरा नहीं था; इसके विपरीत सदोम के दुष्ट लोगों की तुलना में उसे "धर्मी" के रूप में दर्शाया गया है (2 पतरस 2:7-9)। फिर भी लूत ने गलत चुनावों की श्रृंखला बनाई और इसका कारण था उनके विभाजित मन। उसने स्पष्ट रूप से "धन और परमेश्वर" दोनों की सेवा करने की कोशिश की (मत्ती 6:24), और परिणाम यह था कि वह "आंखों की अभिलाषा" (1 यूहन्ना 2:16) के सामने हार गया।

लूत का आंकलन ऐसा नहीं समझा जाना चाहिए क्योंकि पाठ हमें बताता है उसने, "अपनी आँखें उठाई और यरदन की सारी तराई को देखा कि वह सारी सींची हुई थी ... प्रभु के बाग की तरह" (13:10)। वह भूमि इतनी उपजाऊ थी कि वह खुद को रोक न सका। इसलिए उसने, "अपना तम्बू सदोम के निकट खड़ा किया" (13:12)। हमारा यह सोचने का कोई कारण नहीं कि लूत ने यरदन तराई में रहने वाले लोगों के विषय में कोई जाँच पड़ताल की होगी कि वे कैसे लोग हैं या यह कि वहां का वातावरण धार्मिक जीवन जीने का प्रयत्न करनेवाले विश्वासी लोगों के लिए प्रतिकूल हैं या नहीं। कथा संकेत करती है कि वह आत्मिकता में खोखला था और उसने जो कुछ देखा उस पर बस मोहित हो गया: भूमि की उपज और सम्पत्ति उसे खींचकर ले गई। लूत ने बिना यह विचार किए कि वहां कोई खतरा हो सकता है संसार की बुद्धि का अनुसरण किया, जिससे "स्वार्थी अभिलाषा" के कारण झगड़ा हुआ (देखें याकूब 3:13-16)। उसके चुनाव ने उसे और उसके परिवार को विपत्ति में डाल दिया (19:1-38)।

अपने ही बारे में प्राथमिक सोच रखने के कारण, लूत बहुत कुछ अदन की वाटिका के प्रथम स्त्री और पुरुष के समान था। हालाँकि परमेश्वर ने आदम को भले और बुरे के ज्ञान वाले वृक्ष से फल खाने को मना किया था और बहुत ही स्पष्ट रूप से आदम ने हव्वा को भी मृत्यु के खतरे के सम्बन्ध में बताया था, निषेध फल देखने में बहुत ही मनभाऊ था और वह उस इच्छा को रोक नहीं सकी। और आदम भी नहीं रोक सका (3:6)। इस मामले में उन्होंने परमेश्वर से आने वाले के ऊपर संसार की बुद्धि (सर्प) को चुना। परिणामस्वरूप उन्हें अदन की वाटिका से निकाल दिया गया (3:22-24)।

पुराने नियम में पाए गए अन्य लोगों की परीक्षा हुई और वे भी उसमें गिरे क्योंकि उन्होंने जो "देखा" उससे वे बहक गए। "परमेश्वर के पुत्रों" ने "मनुष्य की पुत्रियों" को देखा और जिस जिसको को चाहा उससे विवाह कर लिया। इन्हीं बातों ने दुष्टता, हिंसा, और विश्व के विनाश का मार्ग तैयार किया (6:1-7, 11-13)। उसी तरह आकान ने यरीहो में चाँदी की शेकेल और सोने की ईंटें देखीं; और उसने परीक्षा में पड़ कर उसे चुरा लिया, और इस घटना ने उसे और उसके परिवार को नष्ट कर दिया (यहोशू 7:19-26)। जब राजा दाऊद ने अपने महल की छत से नीचे देखा तो उसे एक सुन्दर रूपवान स्त्री नहाते हुए दिखाई पड़ी

(शायद बीच का आँगन जो उसके घर का ही हिस्सा था पर खुले आकाश के नीचे था), अभिलाषा ने उसके हृदय में घर कर लिया। अपनी इच्छा के वशीभूत होकर उसने व्यभिचार किया, उस स्त्री के पति का वध किया, दाऊद के अपने परिवार में उसे दुख और मृत्यु का मुहं देखना पड़ा (2 शमूएल 11:1-12:23)।

विवाद या झगड़े की समस्या (13:7, 8)

निम्नलिखित उदाहरण बाइबल के वर्णित बहुत से संबंधों में हुए विवाद और झगड़े और उसके विनाशकारी स्वभाव को दर्शाते है।

विवाह में - अब्राहम, सारा, और हाजिरा (16:1-9; 21:8-12); याकूब, राहेल, और लिया (29:21-30:24)।

परिवार में - कैन और हाबिल (4:1-15; 1 यूहन्ना 3:10-14); याकूब और एसाव (25:22-34; 22:1-45); यूसुफ और उसके भाई (37:2-28)।

समाज में - इस्राएलियों के गोत्रों में जलन: मनश्शे के वंश के गिदोन के विषय एप्रैम की शिकायत (न्यायियों 6:11-15; 8:1-21)।

शासन प्रणाली - अबशालोम का अपने पिता से राज्य छीनने का प्रयास करना (2 शमूएल 15:1-18:33; परमेश्वर के लोगों का उत्तर इस्राएली राज्य और दक्षिण यहूदा के राज्य में दुखद विभाजन होना (1 राजा 12:1-33)।

कलीसिया में - जब जलन रखने वाले और स्वयं केंद्रित लोग अपने मन का पूरा करना चाहते है, जैसे रोम में था (रोमियों 12:16-18; 13:13-15:7) और कुरिन्थियों (1 कुरि. 3:1-5, 21-23; 4:1-21; 8:1-3; 13:1-13)।

परमेश्वर के प्रति अब्राहम का विश्वास (13:14-18)

अब्राहम ने जब प्रतिज्ञा के देश का नवीकरण किया तब उसके विश्वास का आदर परमेश्वर ने भी किया। उत्पत्ति 13:2-12 की घटना से यह प्रदर्शित होता है कि अब्राहम लूत से अपने पुत्र के समान प्रेम रखता था। उसने स्पष्ट रूप से हारान, जो लूत का पिता और उसका भाई था की मृत्यु के बाद लूत की देख भाल अपनी छत्र छाया में की। अब्राहम ने कनान की यात्रा के दौरान भी लूत को अपने संग लिया, हालाँकि परमेश्वर ने उसे अपने सभी लोगों को हारान में ही छोड़ कर आने की आज्ञा दी थी। उसने अवश्य ही अपनी संपत्ति का बड़ा हिस्सा भी अपने भतीजे लूत को दिया होगा, और तो और प्रतिज्ञा के देश में भी लूत को पहला चुनाव करने का अधिकार दिया कि वह अपने और अपने लोगों के बसने के लिए जगह चुन ले। लूत जब अपने लोगों और संपत्ति के साथ चला गया तब अवश्य ही अब्राहम ने एक खालीपन को महसूस किया होगा और उसे तसल्ली की ज़रूरत थी।

कुलपति अब्राहम ने पहले भी अपने जीवन में निम्न स्थिति का अनुभव किया था जब उसने मिस्र में स्वार्थी होकर सारा के विषय में झूठ बोला था। इस बार उसने लूत को यरदन की घाटी की उपजाऊ भूमि का चुनाव करने देने के द्वारा उदारता का कार्य किया था; फिर भी जब उसने लूत को उसके घराने समेत जाते

हुए देखा, तो शायद उसे निराशा का एहसास हुआ, क्योंकि वह एक व्यक्ति को खो रहा था जो उसके लिए एक पुत्र समान था और इसके साथ-साथ कनान भूमि का उत्तम भाग भी जाता नज़र आ रहा।

परमेश्वर अब्राहम के हृदय के खालीपन को जानता था, और उसने इस बात का इन्तज़ार नहीं किया की अब्राहम उसकी दुहाई दे। इस अवसर पर परमेश्वर स्वयं ही अब्राहम से कहता है "आँख उठा का दृष्टि कर" लूत की तुलना में जहाँ उसने "आँख उठा कर देखा," परमेश्वर अब्राहम को "दृष्टि करने" की चुनौती देता है जबकि लूत ने सिर्फ़ "देखा" था (13:10, 14)। बाइबल कहती है की लूत ने यरदन की सिंची और उपजाऊ भूमि को "अपने लिए चुन लिया" (13:11); पर परमेश्वर ने इस बार पर ज़ोर दिया की अब्राहम के हिस्से की भूमि उसे उसकी ओर से भेंट होगी। परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, "... जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को युग-युग के लिये दूंगा" (13:15)।

जब अब्राहम विश्वास की एक और संकटावस्था से संघर्ष कर रहा था, परमेश्वर ने उसे प्रोत्साहन दिया। उसने निरंतर अब्राहम को यह आश्वासन दिया, की जो यरदन की तराई का हिस्सा लूत ने चुना है, वह उस भूमि से जो परमेश्वर ने उसे और उसके वंशज को देने की शपथ खाई है, अधिक जोखिम से भरा हुआ है। स्पष्ट रूप से इस बात को प्रकट करने की भी कोई आवश्यकता नहीं समझी की बाद के इतिहास में लूत के वंशज - मोआबी और अम्मोनी - किसी भी तरह से वास्तविक कनान की भूमि में बसने नहीं पाएंगे। वे यरदन नदी के पूर्व और मृत सागर में ही वास करेंगे। वह चाहता था की अब्राहम इस बात पर विश्वास करे कि प्रतिज्ञा का देश देने की उसकी शपथ अभी भी अडिग है, और यह भी कि अब्राहम अपने प्रतिदिन के जीवन में आने वाले समस्त लोगों के लिए आशीष का मूल ठहरेगा इसी बात को जानकार वह आगे बढ़ता जाये। एक देश की प्रतिज्ञा के पुनः नवीकरण से कृतज्ञ होकर अब्राहम ने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई (13:18)।

समाप्ति नोट्स

[1]जॉन एच. वालटन, विक्टर एच. मैथ्यूज़, और मार्क डबल्यू. खैवलेस, IVP *बाइबल बैकग्राउंड कमैंट्री: ओल्ड टैस्टामैन* (डोनर्स ग्रोव, इलल., रू इन्टर वर्सिटी प्रैस, 2000), 44-45. [2]ऐसा संकेत दिया गया है कि "कनानी" ("व्यापारी") शहरों में रहते थे जबकि "परिज्जी" ("गांववासी") देश में रहते थे। फिर भी यह अनिश्चित है कि "परिज्जियों" को ऐसा मानना चाहिए कि नहीं। यह शब्द एक नस्ली समूह की ओर संकेत करता है। [3]गोरडन जे. वैनम, *उत्पत्ति 1-15*, वर्ड बिबलिकल कमैंट्री, वोल्यूम 1 (वैको, टैक्स.: वर्ड बुक्स, 1987), 297. [4]देखें नक्शे 12 और 34 योहनान आहरों ने और माइकल एवि-योनाह, *दि मैकमिलन बाइबल एटलस*, 3डी. एड. (न्यू यार्क: मैकमिलन पब्लिशिंग कम्पनी, 1993), 19, 36. [5]कुछ अनुवाद इस वाक्य को, "सोअर के मार्ग तक" पहले ही इस आयत में ले जाते हैं (NJPSV; NEB; REB; NAB; TEV; CEV)। NLT कहता है, "लूत ने यरदन तराई के उपजाऊ जगह को सोर की दिशा में देखा।" [6]मार्टिन जे मुल्डर में वार्तालाप को देखें, "सदोम और अमोरा," *द एंकर बाइबल डिक्शनरी* में, एड. डेविड नोएल फ्रीमैन

(न्यू यार्क: डबलडे, 1992), 6:101-2. [7]जबकि *ओलाम* परमेश्वर और उसके गुणों के लिए "अनंत" और "हमेशा" का अर्थ हो सकता है, यह शब्द ऐसे संदर्भ में भी लिखा है जहां इसका अर्थ "हमेशा" नहीं है। देखें *अनुप्रयोग: "अनंत वाचा,"* पृष्ठ 81-86. [8]इसके स्रोत और अभ्यास की चर्चा के लिए, देखें ब्रूस के. वालके, *जैनेसिस: कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोनड्रेवन पब्लिशर्स, 2001), 222-23. [9]हेब्रोन यरुशलेम के दक्षिण पश्चिम से लगभग 20 मील की दूरी पर था।